उत्तर प्रदेश माध्यमिक संस्कृत शिक्षा परिषद् , लखनऊ
नई शिक्षा नीति 2020 आधारित पाठ्यक्रम
पौरोहित्य (कर्मकाण्ड) डिप्लोमा प्रथम सत्रार्ध (सेमेस्टर)
सत्र 2024-2025

प्रस्तावना –

भारतीय वैदिक सनातन संस्कृति में देवाराधना, देवोपासना और साधना का सर्वोपरि महत्त्व है। आराधना में आराध्य और आराधक, उपासना में उपास्य और उपासक व साधना में साध्य और साधक का अभेद सम्बन्ध है। विषय की दृष्टि से वेद मन्त्रों के तीन काण्ड हैं जिसमें कर्मकाण्ड, उपासनाकाण्ड और ज्ञानकाण्ड शामिल हैं। इन्हीं के आधार पर सभी प्रकार के पूजन किए जाते हैं। मांगलिक कार्यों, शुभकार्यों, यज्ञ, अनुष्ठान, व्रत-पर्वोत्सव, उद्यापन, उपनयन, विवाह आदि संस्कार, पंचांग-पूजन में स्वस्तिवाचन, शान्तिपाठ, गणेश पूजन, कलश स्थापन, पुण्याहवाचन, षोडशमातृकापूजन, सप्तघृतमातृकापूजन, रक्षाविधान एवं आयुष्यमन्त्रपाठ, नवग्रहमण्डलपूजन, तथा ब्राह्मणवरण आदि समाहित है।कर्मकाण्ड का उद्गम स्थल मूल रूप से वेद है । वेद कर्मकाण्ड का ही नहीं वरन् सर्वविद्या का मूल है । कर्मकाण्ड का सम्बन्ध केवल पूजन, पाठ, यज्ञ, विभिन्न प्रकार के अनुष्ठान से ही सम्बन्धित नहीं है, बल्कि इसका सम्बन्ध मानव के जीवन से भी सीधे जुड़ा है। धार्मिक क्रियाओं से जुड़े कर्म को 'कर्मकाण्ड' कहते है ।

उद्देश्य –

- पौरोहित्य विद्या का ज्ञान जन-जन तक पहुंचाना।
- सभी सनातन धर्मपासकों को पौरोहित्य शास्त्रों का अध्ययन से कर्मकाण्ड भली भांति अवगत कराना।
- पुरोहित वृत्ति को आर्थिक रूप से जीविकोपार्जन योग्य बनाने का प्रयत्न करना।

- इस क्षेत्र में देश-विदेश की रिक्तियों को भरने हेतु पुरोहितों को प्रशिक्षित करना तथा रिक्तियों वाली संस्थाओं व पुरोहितों के बीच एक कड़ी की भांति कार्य करना।
- समाज और पुरोहित वर्ग के बीच सतत् संवाद स्थापित करना।
- समाज धर्म शिक्षक एवं कुशल पुरोहित बनना।

प्रश्न पत्र कोड	विषय एवं पाठ्यवस्तु विवरण	क्रेडिट
प्रथम प्रश्न पत्र (100 अंक)-	**नित्यकर्म विधि विमर्श -** Unit - 1 ▪ प्रातः जागरण-कर्तव्यम्, ▪ प्रातः स्मरण श्लोक, Unit - 2 ▪ पूजन पद्धति क्रम, ▪ तिलक धारण, आचमन, शिखा बन्धन, पवित्रीकरण ▪ सन्ध्योपासन विधि, ▪ तर्पण विधि, ▪ पञ्च महायज्ञ Unit - 3 ▪ स्वस्ति वाचन, ▪ देवतीर्थ नमस्कार, ▪ संकल्प Unit – 4 ▪ भूमि पूजन, ▪ दिक्शुद्धि, ▪ दीप पूजन, ▪ शंख एवं घण्टा पूजन	4
फलितांश	प्रातः जागरण के पश्चात स्नान से पूर्व के कृत्य- ब्रह्म मुहूर्त में जागरण करावलोकन, भूमि-वन्दना, मंगल-दर्शन, माता-पिता, गुरु एवं ईश्वर का अभिवादन मानसिक शुद्धि का मन्त्र, प्रातः स्मरणीय श्लोक - गणेश स्मरण, विष्णु स्मरण, शिव स्मरण, देवी स्मरण, सूर्य स्मरण,	

	त्रिदेवों के साथ नवग्रह स्मरण, ऋषि स्मरण, प्रकृति स्मरण, पुण्य श्लोकों का स्मरण, दैनिक कृत्य-सूची-निर्धारण आदि से अवगत होना।	
सहायक पाठ्य पुस्तक	• नित्यकर्म पूजा प्रकाश, गीता प्रेस गोरखपुर • बृहद नित्यकर्म समुच्चय	
द्वितीय प्रश्न पत्र (100 अंक)	**षोडशोपचार गणेशाम्बिका एवं पंचाङ्ग,नवग्रह, असंख्यातरुद्र पूजन विधि -** Unit - 1 ▪ गणेशाम्बिका पूजन, ▪ कलश स्थापन एवं पुण्याहवाचन Unit – 2 ▪ षोडमातृका पूजन एवं चक्र निर्माण परिज्ञान, ▪ सप्तघृत मातृका पूजन एवं चक्र निर्माण परिज्ञान Unit – 3 ▪ आयुष्मन्त्र जप ▪ आभ्युदयिक नान्दी श्राद्ध, ▪ ब्राह्मणवरण Unit – 4 ▪ नवग्रह देवता पूजन एवं चक्र निर्माण परिज्ञान, ▪ असंख्यात रुद्रकलश पूजन,	**कुल 4**
फलितांश	मांगलिक कार्यों, शुभकार्यों, यज्ञ, अनुष्ठान, व्रत-पर्वोत्सव, उद्यापन, उपनयन, विवाह आदि संस्कारों में (पंचांग-पूजन) स्वस्तिवाचन, शान्तिपाठ, गणेश पूजन, कलश स्थापन, पुण्याहवाचन, षोडशमातृकापूजन, सप्तघृतमातृकापूजन, रक्षाविधान एवं आयुष्यमन्त्रपाठ, नवग्रहमण्डलपूजन, तथा ब्राह्मणवरण आदि समाहित है, इन सब की जानकारी होगी।	
सहायक पाठ्य	• ग्रहशान्तिपद्धति, पं वेणीराम गौड़	

पुस्तक	• मंत्र संहिता, पं. वेणीराम गौड़ • वेदीपूजन. पं. अशोक गौड़	
तृतीय प्रश्न पत्र (100 अंक)	**हवन विधि एवं वास्तु, क्षेत्रपाल, चतुःषष्टियोगिनी, सर्वतोभद्र, लिङ्गतोभद्र संक्षिप्त पूजन –** Unit - 1 ▪ पंचभू संस्कार अग्नि स्थापन, ▪ कुशकण्डिका, ▪ कुण्ड निर्माण व स्थण्डिल निर्माण (हवन वेदी), ▪ होम द्रव्य एवं यज्ञीय सामग्री, ▪ नवग्रह एवं दशदिग्पाल बलि विधान, Unit - 2 ▪ केवल नाम क्रमेण क्षेत्रपाल पूजन, ▪ केवल नाम क्रमेण चतुःषष्टियोगिनी पूजन, Unit - 3 ▪ केवल नाम क्रमेण सर्वतोभद्र पूजन, ▪ केवल नाम क्रमेण लिङ्गतोभद्र पूजन, Unit - 4 ▪ वास्तु चक्र निर्माण परिज्ञान एवं पूजन (वास्तु शान्ति) ▪ क्षेत्रपाल चक्र निर्माण परिज्ञान, ▪ चतुःषष्टियोगिनी चक्र निर्माण परिज्ञान, ▪ सर्वतोभद्र चक्र निर्माण परिज्ञान, ▪ लिङ्गतोभद्र चक्र निर्माण परिज्ञान,	**कुल 4**
फलितांश	यज्ञ, अनुष्ठान, बृहत् पूजन आदि में षोडशमातृका, वसोर्द्धारा, योगिनी, नवग्रह, वास्तु, सर्वतोभद्र, लिङ्गतोभद्र, क्षेत्रपाल, हवन आदि वेदियां बनायी जाती है तथा इन वेदियों पर शास्त्रोक्त देवों की स्थापना कर पूजन की जानकारी होगी।	
सहायक पाठ्य पुस्तक	• ग्रहशान्तिपद्धति, पं वेणीराम गौड़ • मंत्र संहिता, पं. वेणीराम गौड़ • वेदीपूजन. पं. अशोक गौड़ • बृहद् नित्यकर्म समुच्चय	

	• दूर्गार्चन पद्धति, पं.शिवदत्त मिश्र	
चतुर्थ प्रश्न पत्र (100 अंक)	**सूक्त,स्तोत्र पाठ एवं वैदिक और लौकिक आरती परिज्ञान -** Unit - 1 ▪ गणपति अथर्वशीर्ष पाठ, ▪ पुरुषसूक्त, गजेन्द्र मोक्ष स्तोत्र ▪ रुद्रसूक्त, Unit - 2 ▪ श्रीसूक्त, ▪ देवी सूक्त, Unit - 3 ▪ आदित्य हृदय स्तोत्र, ▪ कनक धारा स्तोत्र, ▪ रामरक्षा स्तोत्र, ▪ शिव ताण्डव स्तोत्र, ▪ नवग्रह स्तोत्र, Unit - 4 ▪ बिष्णु सहस्रनाम स्तोत्र, ▪ वैदिक आरती मन्त्र, ▪ लौकिक आरती गान (गणेश, शंकर, बिष्णु, दूर्गा जी की)	कुल 4
फलितांश	कर्मकाण्ड साहित्य मे सूक्त पाठ आरती का मतलब पूजा, भजन, अनुष्ठान में भगवान की स्तुति, दैवीय राग में गाकर देवता को प्रसन्न करना। उपरोक्त सूक्त, स्तोत्र एवं आरती जिन-जिन देवताओं से सम्बन्धित हैं उनको अभिष्ट की पूर्ति हेतु प्रसन्न करना।	
सहायक पाठ्य पुस्तक	• पौरोहित्य कर्म प्रशिक्षक, डॉ. सच्चिदानन्द पाठक, प्रकाशक- उ.प्र.संस्कृत संस्थान, लखनऊ • स्तोत्र रत्नावली, गीता प्रेस • सूक्त सग्रह	
प्रशिक्षुता सेवा (इंटर्नशिप) (100 अंक)- (विद्यालय स्तर	**पठित पाठांशों का मौखिकी एवं प्रायोगिक -** Unit - 1 ▪ मौखिकी मन्त्र पाठ (मुखपाठ) ▪ प्रवचन विधि	कुल 4

पर मूल्यांकन)	Unit – 2 ▪ प्रवचन विधि/कथा Unit – 3 ▪ प्रयोग विधि पूजन स्तोत्र, आरती आदि (प्रायोगिक) Unit – 4 ▪ प्रयोग विधि वेदी, कुण्डादि निर्माण (प्रायोगिक)	
फलितांश	पठित ईकाईयों के आधार पर मौखिक मन्त्र पाठ तथा विधि भाग का प्रवचन उपास्थापित करना।	
सहायक पाठ्य पुस्तक	उपरोक्त पुस्तके	

पौरोहित्य (कर्मकाण्ड) डिप्लोमा द्वितीय सत्रार्ध (सेमेस्टर)

प्रश्न पत्र कोड	विषय एवं पाठ्यवस्तु विवरण	**क्रेडिट**
प्रथम प्रश्न पत्र (100 अंक)	**भारतीय संस्कृति एवं षोडश संस्कार परिचय तथा संक्षिप्त विधि-विधान -** Unit - 1 ▪ भारतीय संस्कृति का संक्षिप्त परिचय, ▪ षोडश संस्कारों का संक्षिप्त परिचय एवं नाम, ▪ संस्कारों का मनोवैज्ञानिक स्वरूप, ▪ संस्कारों की आवश्यकता वर्तमान परिप्रेक्ष्य में, ▪ संस्कारों का वैज्ञानिक पक्ष, Unit - 2 ▪ अन्तर्गर्भ संस्कारों का संक्षिप्त परिचय एवं संक्षिप्त विधि-विधान (गर्भाधान संस्कार, पुंसवन संस्कार, सीमन्तोन्नयन संस्कार), ▪ जन्म के बाद के संस्कारों का संक्षिप्त परिचय एवं संक्षिप्त विधि-विधान (जातकर्म संस्कार, निष्क्रमण संस्कार,	**कुल 4**

	नामकरण संस्कार, अन्नप्राशन संस्कार) Unit - 3 ▪ चूड़ाकरण संस्कार (मुण्डन) संक्षिप्त विधि-विधान, ▪ विद्यारम्भ संस्कार (अक्षरारम्भ) संक्षिप्त विधि-विधान, ▪ कर्णवेध संस्कार संक्षिप्त विधि-विधान, ▪ उपनयन संस्कार (यज्ञोपवीत) विधि-विधान, ▪ वेदारम्भ संस्कार संक्षिप्त विधि-विधान, ▪ केशान्त संस्कार संक्षिप्त विधि-विधान, ▪ समावर्तन संस्कार संक्षिप्त विधि-विधान, Unit - 4 ▪ पाणिग्रहण (विवाह) संस्कार एवं विधि-विधान, ▪ आठ प्रकार के विवाहों का संक्षिप्त परिचय (ब्राह्म विवाह, प्राजापत्य विवाह, दैव विवाह, आर्ष विवाह, गान्धर्व विवाह, आसुर विवाह, राक्षस विवाह, पैशाच विवाह), ▪ अन्तेष्टि संस्कार विधि-विधान(श्राद्ध कर्म विधि-विधान)	
फलितांश	विभिन्न धर्मग्रंथों में संस्कारों के क्रम में थोडा-बहुत अन्तर है, लेकिन प्रचलित संस्कारों के क्रम में गर्भाधान, पुंसवन, सीमन्तोन्नयन, जातकर्म, नामकरण, निष्क्रमण, अन्नप्राशन, चूड़ाकर्म, विद्यारंभ, कर्णवेध, यज्ञोपवीत, वेदारम्भ, केशान्त, समावर्तन, विवाह तथा अन्त्येष्टि ही मान्य है। गर्भाधान से विद्यारंभ तक के संस्कारों को गर्भ संस्कार भी कहते हैं। इनमें पहले तीन (गर्भाधान, पुंसवन, सीमन्तोन्नयन) को अन्तर्गर्भ संस्कार तथा इसके बाद के छह संस्कारों को बहिर्गर्भ संस्कार कहते हैं। गर्भ संस्कार को दोष मार्जन अथवा शोधक संस्कार भी कहा जाता है। दोष मार्जन संस्कार का तात्पर्य यह है कि शिशु के पूर्व जन्मों से आये धर्म एवं कर्म से सम्बन्धित दोषों तथा गर्भ में आई विकृतियों के मार्जन के लिये संस्कार किये जाते हैं। बाद वाले छह संस्कारों को गुणाधान संस्कार कहा जाता है।	
सहायक पाठ्य	• संस्कार प्रकाश, गीता प्रेस	

पुस्तक	• अन्त्यकर्म श्राद्ध प्रकाश, गीता प्रेस • हिन्दू संस्कार, डॉ.राजबली पाण्डेय • पौरोहित्य कर्म प्रशिक्षक, डॉ. सच्चिदानन्द पाठक, प्रकाशक- उ.प्र.संस्कृत संस्थान, लखनऊ	
द्वितीय प्रश्न पत्र (100 अंक)	**यज्ञ, प्राणप्रतिष्ठा, कथा, जप एवं अनुष्ठान विधि-विधान -** Unit – 1 ▪ श्रौत एवं स्मार्त यज्ञों का संक्षिप्त परिचय एवं प्रयोजन, ▪ रुद्रयाग का परिचय एवं संक्षिप्त विधि-विधान, ▪ बिष्णुयाग का परिचय एवं संक्षिप्त विधि-विधान, ▪ चण्डीयाग का परिचय एवं संक्षिप्त विधि-विधान, ▪ सर्वदेव प्राणप्रतिष्ठा का परिचय एवं संक्षिप्त विधि-विधान, Unit – 2 ▪ सत्यनारायणव्रत कथा पूजन, ▪ रुद्राभिषेक का विधि-विधान, ▪ सप्तवार व्रत कथा का संक्षिप्त परिचय, Unit – 3 ▪ श्रीमद्भागवत परायण कथा का संक्षिप्त विधि-विधान, ▪ श्रीमद्वालमीकिरामायण कथा का संक्षिप्त विधि-विधान, ▪ श्रीरामचरित्रमानस कथा का संक्षिप्त विधि-विधान, Unit - 4 ▪ महामृत्युञ्जय पूजन एवं जप विधि-विधान, ▪ विविध मंत्रो का जप, अनुष्ठान विधि-विधान,	**कुल 4**
फलितांश	**"हस्तौ कल्पोऽथ पठ्यते"** वेदपुरुष के हाथ के रूप में कल्प का स्थान है। कल्प के दो भेद हैं- श्रौत, स्मार्त्त। श्रौत यागों में वेदत्रयी के द्वारा ज्योतिष्टोमादि यागों का विधान किया जाता है। उसी प्रकार स्मार्त्त कर्म तीन कोटि में विभाजित है (१) आचार कर्म (२) व्यवहारकर्म (३) प्रायश्चित कर्म। आचार कर्म के अन्तर्गत (१) संस्कार (२) आह्निककृत्यविषय (३) दान (४) श्राद्ध (५) शान्ति (६) व्रत (७) प्रतिष्ठा (८) उत्सर्ग आते हैं। यज्ञ का तात्पर्य है- त्याग, समर्पण, शुभ कर्म। अपने प्रिय खाद्य पदार्थों एवं मूल्यवान् सुगंधित पौष्टिक द्रव्यों को अग्नि एवं वायु के माध्यम से समस्त संसार के कल्याण के लिए	

	यज्ञ द्वारा वितरित किया जाता है। वायु शोधन से सबको आरोग्यवर्धक साँस लेने का अवसर मिलता है। इसी प्रकार कथा एवं जप का भी परिज्ञान करना। अतः उपरोक्त इकाईयों का संक्षिप्त ज्ञान करना अपेक्षित है।	
सहायक पाठ्य पुस्तक	• ग्रहशान्तिपद्धति, पं वेणीराम गौड़ • मंत्र संहिता, पं. वेणीराम गौड़ • वेदीपूजन. पं. अशोक गौड़ • बृहद् नित्यकर्म समुच्चय • प्रतिष्ठा महोदर्धी, पं. वायुनन्दन मिश्र • पौरोहित्य कर्म प्रशिक्षक, डॉ. सच्चिदानन्द पाठक, प्रकाशक- उ.प्र.संस्कृत संस्थान, लखनऊ • दूर्गार्चन पद्धति, पं.शिवदत्त मिश्र	
तृतीय प्रश्न पत्र (100 अंक)	**सूतक निर्णय, सामान्य धर्मशास्त्र, व्रतोपवास, उद्यापन विचार -** Unit – 1 ▪ जन्म सूतक विचार, ▪ मृत्यु सूतक विचार, ▪ सूर्य एवं चन्द्र ग्रहण में सूतक विचार, Unit – 2 ▪ एकादशी व्रत का निर्णय तथा संक्षिप्त परिचय एवं विधि, ▪ सप्तवार व्रत का संक्षिप्त विधि, ▪ प्रदोष व्रत एवं मासशिवरात्री व्रत का निर्णय, परिचय एवं संक्षिप्त विधि-विधान, ▪ नवरात्र व्रत का संक्षिप्त विधि-विधान Unit – 3 ▪ राम नवमी, जन्माष्टमी व्रत का परिचय एवं संक्षिप्त विधि-विधान, Unit – 4 ▪ विविध व्रतो का उद्यापन का संक्षिप्त विधि-विधान,	
फलितांश	स्मार्त्त कर्म तीन कोटि में विभाजित है (१) आचार कर्म (२) व्यवहारकर्म (३) प्रायश्चित कर्म। आचार कर्म के अन्तर्गत व्रत, प्रतिष्ठा, उत्सर्ग आते हैं। अतः उपरोक्त इकाईयों का संक्षिप्त ज्ञान	

	करना तथा धर्म शास्त्र प्रमाण से सूतक का परिज्ञान करना।	
सहायक पाठ्य पुस्तक	• पौरोहित्य कर्म प्रशिक्षक, डॉ. सच्चिदानन्द पाठक, प्रकाशक- उ.प्र.संस्कृत संस्थान, लखनऊ • निर्णय सिन्धु, कमलाकर भट्ट	
चतुर्थ प्रश्न पत्र (100 अंक)-	**सामान्य ज्योतिष (पंचाङ्ग एवं मुहूर्त्त, लग्न परिज्ञान) -** Unit – 1 ▪ तिथि ज्ञान, ▪ वार ज्ञान, ▪ नक्षत्र ज्ञान, ▪ करण ज्ञान, ▪ योग ज्ञान, Unit – 2 ▪ विवाह मुहूर्त्त विचार, ▪ अन्नप्राशन मुहूर्त्त विचार, ▪ मुण्डन मुहूर्त्त विचार, ▪ उपनयन मुहूर्त्त विचार, ▪ सर्वदेव प्रतिष्ठा मुहूर्त्त विचार Unit – 3 ▪ शिला न्यास एवं गृह प्रवेश मुहूर्त्त विचार, Unit – 4 ▪ लग्न विचार एवं लग्नाङ्क चक्र निर्माण विधि,	
फलितांश	मुहूर्त, ज्तोतिष के छः अंगों (जातक, गोल, निमित्त, प्रश्न, मुहूर्त, गणित) में से एक अंग है। **जातकगोलनिमित्तप्रश्नमुहूर्त्ताख्यगणितनामानि ।** **अभिदधतीहषडङ्गानि आचार्या ज्योतिषे महाशास्त्रे ॥ (प्रश्नमार्गः)** शुभ कार्य करने के लिए वांछित समय के गुण-दोष का विचिन्तन मुहूर्त के अन्तर्गत प्रतिपादित है। **सुखदुःखकरं कर्म शुभाशुभमुहूर्त्तजं ।** **जन्मान्तरेऽपि तत् कुर्यात् फलं तस्यान्वयोऽपि वा ॥** वार, नक्षत्र, तिथि, करण, नित्ययोग, ग्रह, राशि - ये मुहूर्त्त-निर्णय के लिए आवश्यक हैं।	

सहायक पाठ्य पुस्तक	• मुहूर्त्त चिन्तामणि • बृहदावकहणा चक्र • ज्योतिष सर्व सग्रह	
प्रशिक्षुता सेवा (इंटर्नशिप) (100 अंक)- (विद्यालय स्तर पर मूल्यांकन)	**पठित पाठांशों का मौखिकी एवं प्रायोगिक -** Unit - 1 ▪ मौखिकी मन्त्र पाठ (मुखपाठ), ▪ प्रवचन विधि Unit – 2 ▪ प्रवचन विधि/कथा Unit – 3 ▪ प्रयोग विधि पूजन स्तोत्र, आरती आदि (प्रायोगिक) Unit – 4 ▪ प्रयोग विधि वेदी, कुण्डादि निर्माण (प्रायोगिक)	**कुल 4**
फलितांश	पठित ईकाईयों के आधार पर मौखिक मन्त्र पाठ तथा विधि भाग का प्रवचन उपास्थापित करना।	
सहायक पाठ्य पुस्तक	उपरोक्त पुस्तकें	

पाठ्यक्रम निर्माण समिति –

1. **डॉ० नीरज तिवारी**, सहायक प्रोफेसर, संस्कृत साहित्य विद्या शाखा, केन्द्रीय संस्कृत विश्वविद्यालय, गोमती नगर लखनऊ उ०प्र०।

2. **डॉ० शक्तिधर नाथ पाण्डेय,** प्राचार्य० अवकाश प्राप्त, लालगंज प्रतापगढ़।

3. **डॉ० हरपति सहाय कौशिक**, प्रधानाचार्य, संस्कृत महावि० बमनवा टहरौली झांसी।

4. **डॉ० अवध राम पाण्डेय,** प्रधानाचार्य, श्री वंशीधर सं०महाविद्यालय, सरायनन्दन वाराणसी

5. **डॉ० रंगनाथ त्रिपाठी**, श्री गोरक्षनाथ सं०महावि० गोरखपुर।